23

बिना नीचे ठोकर मारे शिखर पर कैसे पहुंचें

2 शमूएल 8-12; 21; 23; 1 इतिहास 11; 18-20; 23; 27

किताबों की दुकान पर आत्म-उन्नति विभाग में अधिकतर किताबें या तो सफल कैसे बनें या असफलता का सामना कैसे करें, के विषय पर ही मिलती हैं। इसमें *पूर्ण सफलता का नुस्खा, जीतने की कला, जन्म-जात विजयी, आप कर सकते हैं,* और *सफलता का अचूक ढंग* जैसे विषयों पर ही किताबें होती हैं। किताबें हमें तनाव, थकावट, हीन भावना, निराशा, जटिल लोगों, क्रोध, बुराई, भय तथा शोक का सामने करने का ढंग बताती हैं। स्पष्टतया सफलता को सज़्भालने का ढंग बताने वाली कोई पुस्तक नहीं मिलती।

परन्तु हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता सफलता को सज़्भालने के लिये अगुआई पाना है। विनाश का आक्रमण होने पर, हम अपना पूरा जोर लगा देते हैं। कहीं तूफान से बर्बादी हो जाए, प्रलय से खेत और घर नष्ट हो जाएं, पड़ोस में आग से विनाश हो जाए, हम प्रभावित जगहों पर सहायता के लिए दौड़ पड़ते हैं। हम उनकी सहायता के लिए समय, धन तथा ऊर्जा बलिदान करते हैं। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा होता है, जब हम शिखर तक पहुंचने के लिए लोगों का इस्तेमाल करके उन्हें फैंककर नाखून और पंजे मारते हुए मुकाबला करने वाले राक्षस बन जाते हैं।

जब सफलता मिलती है, तो हम अपना संतुलन खो बैठते हैं। अमेरिका में हम आर्थिक तंगी की शिकायत करते हैं, इसके बावजूद हमारी स्थिति संसार के शेष भाग से 99 प्रतिशत अच्छी है। हम शिकायत करते हैं कि हमें बहुत कठिन परिश्रम करना पड़ता है, परन्तु हमारे पास विलासिता के लिए अपने बाप-दादाओं से अधिक समय है। वास्तव में अपने धन तथा खाली समय में, ''शिखर तक पहुंच'' जाने के बावजूद हम में से कई ''नीचे ठोकरें मार रहे'' हैं।

हम सफलता को सज़्भाल कर कैसे रख सकते हैं? यह देखकर कि दाऊद कितना सफल था, आइए उन सुझावों पर ध्यान दें कि बिना अपने प्राणों की हानि किए हम सफल कैसे हो सकते हैं। हम दाऊद के शेष जीवन पर पाप की परछाई पड़ने से पहले के उसके

आनन्द के अंतिम दिनों का अध्ययन करेंगे।

ज़ोर उस साम्राज्य पर रहेगा जिसे दाऊद ने स्थापित किया था। हम इन घटनाओं के महत्व को कम करके नहीं आंकना चाहते। यहूदियों के लिए, ये और सुलैमान के शासन के आरम्भिक वर्ष हमेशा इस्राएल का ''सुनहरी युग'' मना जाएगा। इसके साथ ही चाहिए कि हम इन घटनाओं के महत्व पर आवश्यकता से अधिक ज़ोर न दें। बहुत से मामलों में, सन्दूक को यरूशलेम में लेकर जाने जैसे आत्मिक विषयों के विपरीत, पूरा अध्याय देने के बजाय समस्त देशों की हार का वर्णन कुछ ही आयतों में कर दिया जाता है। बाइबल ऐसे मामलों को ध्यान में रखती है।

परन्तु, यह तथ्य रह जाता है कि दाऊद एक योद्धा, राजनयिक तथा राजा के रूप में सफल व्यक्ति *था*। उसकी सफलताओं के इतिहास की समीक्षा करते हुए हम उन कारकों की ओर ध्यान दे सकते हैं, जिनसे वह जीवन की सबसे महत्वपूर्ण बातों का त्याग किए बिना शिखर पर पहुंचने के योग्य बना और हम भी बन सकते हैं।

दाऊद शिखर तक पहुंचा

2 शमूएल 8–10 में राजा दाऊद की उपलब्धियां चरम तक पहुंच जाती हैं। ये अध्याय दाऊद के जीवन में आने वाले बुरे दिनों के लिए मंच तैयार करते हैं।

एक साम्राज्य स्थापित किया गया (2 शमू. 8; 21; 23; 1 इति. 11; 18; 20)

2 शमूएल 8 का अधिकतर भाग दाऊद की सैनिक विजयों का सार ही है। इन विजयों के बारे में पढ़ते हुए तीन तथ्यों को ध्यान में रखना आवश्यक है: (1) दाऊद इब्राहीम को दी गई सदियों पुरानी प्रतिज्ञा को पूरा कर रहा था (उत्पत्ति 15:18–21)। (2) दाऊद सदियों पहले यहोशू द्वारा आरम्भ किए गए कार्य को पूरा कर रहा था (यहोशू 1:4; 21:43)। (3) दाऊद वह शान्ति कायम कर रहा था, जिसके लिए परमेश्वर ने कहा था कि मन्दिर के बनने से पहले आवश्यक है।

पश्चिम की ओर। सैनिक विजयों की सूची, इस्राएल के शाश्वत शत्रु पलिश्तीन से आरम्भ होती है (पृष्ठ 84 का मानचित्र देखें)। ''इसके बाद[1] दाऊद ने पलिश्तियों को जीत कर अपने अधीन कर लिया और दाऊद ने पलिश्तियों की राजधानी[2] [अर्थात, गत[3]] की प्रभुता उनके हाथ से छीन ली'' (2 शमूएल 8:1)।

पलिश्तियों के विरुद्ध दाऊद ने कई युद्ध लड़े थे। आइए आसपास के देशों से दाऊद के युद्धों पर विशेष तौर पर ध्यान देते हुए संक्षेप में उनकी समीक्षा करते हैं। हम पहले भी इस देश के विरुद्ध दो निर्णायक युद्धों के बारे में पढ़ चुके हैं, जिनमें दाऊद को समस्त इस्राएल का राजा बनाया गया था (2 शमूएल 5)। 2 शमूएल के अंत में परिशिष्ट में, हम पलिश्तियों के साथ युद्धों के कई संक्षिप्त विवरण पढ़ते हैं।[4]

दूसरा शमूएल 21:15–22 उन चार युद्धों के बारे में बताता है, जिनमें चार पलिश्ती

दानव मारे गए थे, जो स्पष्टतया प्रसिद्ध गोलियत के सज़्बन्धी थे। पहले तो, देर तक लड़ाई चलने पर दाऊद उकता गया था। (मैं उसके बड़बडाने की कल्पना करता हूं, ''यह तलवार मुझे भारी ज़्यों लग रही है? मुझसे वैसे ज़्यों नहीं चल रही जैसे पहले चलती थी? मैं बूढ़ा ता नहीं हो गया? यह बात तो नहीं है!'') यिशबोबनोब नामक एक पलिश्ती ''जो रपाई के वंश का था'' (आयत 16), ने देखा कि दाऊद थक गया है और उस ने उस ''बड़े हत्यारे'' को स्वयं मार कर नाम कमाना चाहा। वह अपना बड़ा भाला[5] और तेज धार तलवार लेकर राजा की ओर बढ़ा।[6] योआब का भाई और अपराध में भागीदार, अबीशै, जो हर समय किसी को मारने को तैयार रहता था (1 शमूएल 26:6-9; 2 शमूएल 16:8, 9; 19:21), यह देखकर कि ज़्या हो रहा है राजा की ओर भागा। इस बार उसने शत्रु को मारने के लिए दाऊद की अनुमति नहीं ली, बस उसे मार दिया। (यहां हमें समझ आती है कि दाऊद ने उसे अपने लिए सिर-दर्द होने के बावजूद अपने आस-पास ज़्यों रखा था।)

इस घटना से दाऊद के साथी घबरा गए। अगली बार उन्होंने उससे घर रहने का आग्रह किया: ''तू हमारे संग युद्ध को जाने न पाएगा, ऐसा न हो कि तेरे मरने से इस्राएल का दीया बुझ जाए'' (आयत 17)। दीये की बात संभवत: पवित्र स्थान में जलने वाले सोने के धूपदान को ध्यान में रखकर कही गई होगी, जो उस अंधेरे कमरे में एक मात्र रोशनी थी। उन्होंने दाऊद को इस्राएल के सबसे बड़े राष्ट्रीय संसाधन के रूप में माना।

दूसरे युद्ध में एक इस्राएली ने एक और ''रपाई वंशी'' को मार डाला (आयत 18)। तीसरे युद्ध में, दाऊद के ''शूरवीरों'' (2 शमूएल 23:24) ने एक दानव को मार डाला जो स्पष्टतया गोलियत का निकट सज़्बन्धी था।[7] चौथे युद्ध में, दोनों हाथों और दोनों पांवों में छह-छह अंगुलियों वाले दानव को दाऊद के एक भानजे ने मार दिया (आयतें 20, 21)।

इसके अलावा, बहुत से ''बहादुरी के काम'' दाऊद के ''शूरवीरों'' और उनके कार्यों का उल्लेख पलिश्तियों के साथ युद्धों में उनके कार्यों का वर्णन 2 शमूएल 23 में मिलता है। उदाहरण के लिए, एक बार जब इस्राएली पलिश्तियों से लड़ रहे थे, तो एक को छोड़ सारे इस्राएली भाग गए थे। उसने पीछे हटने से इनकार कर दिया और ''तब तक'' लड़ता रहा ''जब तक ... तलवार हाथ से चिपट न गई।'' परमेश्वर ने उसकी बहादुरी का इनाम दिया और ''उस दिन ... बड़ी विजय कराई'' (आयत 10)। एक अन्य अवसर पर, जब इस्राएली पलिश्तियों से लड़ रहे थे और सब भाग गए थे, तो केवल एक इस्राएली सिपाही मसूर के खेत की रक्षा करते हुए,डटा रहा था! वहां भी ''यहोवा ने बड़ी विजय दिलाई'' थी (आयत 12)।

दाऊद के जीवन की मन को छू लेने वाली कहानियों में से एक पलिश्तियों के साथ उसके एक युद्ध के समय घटी थी। दाऊद के गृह-नगर बैतलहम में पलिश्तियों की एक छावनी थी। दाऊद और उसके आदमियों ने नगर के बाहर डेरा डाला हुआ था। बैतलहम के बारे में विचार करते हुए दाऊद जज़्बाती होकर ऊंचे स्वर में कहने लगा: ''काश कोई मुझे बेतलेहेम के फाटक के पास के कुएं का पानी पिला दे!'' (2 शमूएल 23:15)। यह पानी पिलाने के लिए की गई बिनती नहीं थी; बल्कि दाऊद की इच्छा तो केवल उस प्राचीन कुएं

से वैसे ही पानी पीने की थी जैसे वह साधारण व्यक्ति के रूप में राजा बनने से पहले पीया करता था। परन्तु पास खड़े लोगों के लिए दाऊद इतना प्रिय था कि उसकी इच्छा भी उनके लिए आज्ञा की तरह थी। दाऊद के ''तीन शूरवीर'' लड़ते-लड़ते पलिश्तीन से, कुएं से पानी लेकर लड़ते-लड़ते ही नगर से वापस आ गए और अपने सेनानायक केलिए पानी ले आए।

मैं उन्हें दाऊद के सामने झुकते, बर्तन पेश करते, उसके किनारे से ठंडा पानी गिरते देखता हूं। उनके कपड़े फट चुके थे और वे लहू-लुहान थे, उनके शरीरों पर घाव थे जो अपने प्रिय अगुवे के लिए एक कटोरा पानी लाने के कारण हुए थे। उसने बर्तन लिया परन्तु उसे जिसके कारण उसके आदमियों के प्राण जा सकते थे, पीने से इनकार कर दिया। धीरे-धीरे उसने पानी को भूमि पर यहोवा के लिए अर्घ की तरह उंडेल दिया। प्यासी धरती द्वारा उन बूंदों को सोख लेने पर,उसने कहा, ''हे यहोवा, मुझसे ऐसा काम दूर रहे। ज़्या मैं उन मनुष्यों का लोहू पीऊं जो अपने प्राणों पर खेलकर गए थे?'' (आयत 17)। अपने आदमियों को दी दाऊद की इस श्रद्धांजलि को देर तक भुलाया नहीं गया होगा।

पलिश्तियों पर विजयों के और उदाहरण दिए जा सकते हैं। ये उदाहरण इस लिए दिए गए हैं ताकि पता चले कि कुछ ही शब्दों में कितना कुछ बता दिया गया है: ''... दाऊद ने पलिश्तियों को जीतकर अपने अधीन कर लिया'' (2 शमूएल 8:1)। अन्य देशों पर दाऊद की विजयों की जल्दी से समीक्षा करते हुए इस बात को याद रखें। लहू, पसीना और आंसू हर आयत में मिलते हैं। दाऊद के साम्राज्य की स्थापना के सम्बन्ध में, ''दाऊद ने पलिश्तियों को जीतकर अपने अधीन कर लिया'' शब्दों से इस बात का संकेत मिलता है कि दाऊद ने पश्चिम में अपने शत्रुओं पर विजय पा ली थी।

पूर्व की ओर। 2 शमूएल 8:2 में हम देखते हैं कि दाऊद ने पूर्व के अपने शत्रुओं पर विजय पा ली:

> फिर उस ने मोआबियों को भी जीता, और इनको भूमि पर लिटाकर डोरी से मापा; तब दो डोरी से लोगों को मापकर घात किया, और डोरी भर के लोगों को जीवित छोड़ दिया। तब मोआबी दाऊद के अधीन होकर भेंट ले आने लगे।

मोआबी लोग इब्राहीम के भतीजे लूत के वंशज थे।[8] मोआब टूटे देश तथा खारे (मृत) सागर का पूर्व-दक्षिणपूर्वी रेगिस्तान था। आयत 2 ऐसे प्रश्न उठाती है जिनका हम जवाब नहीं दे सकते। जहां तक बाइबल बताती है, मोआबियों के साथ दाऊद का सम्बन्ध अच्छा था। दाऊद मोआबिन रूत का पड़पोता था (रूत 4:17-22)। शाऊल से भगौड़ा होने के समय उसने अपने माता-पिता को मोआब के राजा की शरण में रखा था (1 शमूएल 22:3, 4)। इसके बावजूद, दाऊद ने दो तिहाई मोआबियों को[9] इतनी क्रूरता से मारा था जितना किसी और देश के लोगों को नहीं।[10] उसे ऐसा करने के लिए किसने प्रेरित किया था? ''यहूदी लेखकों का दावा है कि इन लोगों के विरुद्ध इस विशेष कठोरता का कारण दाऊद के माता-पिता और परिवार की उनके द्वारा हत्या है, जिन्हें उसने, ... मोआब के राजा के

पास रखा था।''[11] यह हो भी सकता है और नहीं भी। ज़्योंकि हम दाऊद के इस कार्य का कारण नहीं जानते, इसलिए मानकर भी, हम यकीन से नहीं कह सकते कि दाऊद सही था या गलत।

दाऊद ने मोआब के उज़र में, यरदन नदी के पूर्व में उजाड़-वासी अज़्मोनियों[12] को भी हराया था। मोआबियों की तरह, अज़्मोनी भी लूत के वंशज थे।[13] इस प्रकार पूर्व में इस्राएल के शत्रु उनके अधीन हो गए।

उज़र की ओर। आइए अब उज़र में दाऊद की विजयों पर ध्यान देते हैं: ''फिर जब सोबा का राजा रहोब का पुत्र हददेजर [फरात] महानद के पास अपना राज्य फिर ज्यों का त्यों करने को जा रहा था, तब दाऊद ने उसको जीत लिया'' (2 शमूएल 8:3)। सोबा, जो सूरिया (सीरिया) का भाग था, उज़री दमिश्क का पहाड़ी राज्य था। जब सोबा का राजा फरात नदी के पास अपना इलाका वापस लेने के लिए लड़ रहा था, तो दाऊद ने पीछे से उसकी सेना पर आक्रमण कर दिया। दाऊद को बड़ी विजय मिली, जिसमें उसने 21,700 लोगों को बंदी बना लिया।[14] उसने बहुत से घोड़ों तथा रथों को भी कज़्जे में ले लिया।[15]

राजधानी नगर के इतना निकट विजय से दमिश्क के सीरियाई[16] लोग घबराकर सोबण के राजा के पास सहायता के लिए गए। यह उनकी बहुत बड़ी भूल थी। दाऊद ने 22 हजार सीरियाइयों को मौत के घाट उतार दिया और बचे हुए सीरियाई इस्राएल के दास बन गए। दाऊद ने अपना साम्राज्य सफलतापूर्वक उज़र के साथ-साथ फरात नदी तक फैला लिया।

2 शमूएल 8:6 का दूसरा भाग जोर देता है कि दाऊद ने यह काम कैसे पूरा किया। दाऊद एक सैनिक बुद्धिजीवी था, उसके अगुवे साहसी, उसके लोग योद्धा थे, परन्तु उसकी शानदार सफलताओं के लिए केवल यही जिज़्मेदार नहीं थे। बल्कि, ''जहां दाऊद जाता था वहां-वहां *यहोवा* उसको जयवन्त करता था।'' इन शज़्दों को रेखांकित कर लें; वे हमारे पाठ के इस भाग का विषय हैं।

दाऊद जानता था कि श्रेय किसे दिया जाना चाहिए। वह अपनी विजयों से हुई लूट का माल यरूशलेम ले गया जिसमें सोने की ढालें और बड़ी मात्रा में कांस्य था, और उसने ''इनको ... यहोवा के लिए पवित्र करके'' रखा (2 शमूएल 8:11)। लूट का अधिकतर माल मंदिर के भण्डार के लिए अलग रखा जाता था (नोट 1 इतिहास 18:8; 26:26 से; 1 राजा 7:5; 2 इतिहास 5:1)।

संसार की संपज़ि दाऊद की तिजोरियों में जाने लगी थी। जब हमात के राजा[17] ने सुना कि दाऊद ने उसके पुराने शत्रु, सोबा के राजा को हरा दिया है तो उसने दाऊद के लिए चांदी, सोने और पीतल के उपहार भेजे।[18] दाऊद द्वारा जीते गए देशों, सूरिया, मोआब, अज़्मोन, पलिश्तीन, अमालेक[19] और सोबा के देशों से भी कीमती धातुएं आईं। सब परमेश्वर को अर्पण किया गया। (बाद में, दाऊद ने सुलैमान को बताया कि उसके पास मंदिर के लिए 100,000 किज़्कार [तोड़े] सोना और 1,000,000 किज़्कार चांदी पहले से पड़ी है [1 इतिहास 22:14]। इस लेख के लिखे जाने के समय, अमेरिका का राजस्व घाटा 300 बिलियन डॉलर पहुंच रहा है। दाऊद की राष्ट्रीय *बचत* 100 बिलियन डॉलर के लगभग थी!)

दक्षिण की ओर। दाऊद ने अपना साम्राज्य पश्चिम, पूर्व तथा उज़र में फैला लिया था। आइए उज़र की ओर एदोम पर ध्यान डालते हैं। दूसरा शमूएल 8:13 कहता है, ''और जब दाऊद लोन वाली तराई में अठारह हजार अरामियों को मारके लौट आया, तब उसका बड़ा नाम हो गया।''[20] ज़्योंकि लोन या नमक वाली तराई खारे (अर्थात मृत) सागर के दक्षिण में थी और 1 इतिहास 18:12 में मिलने वाला हवाले में एदोमियों को अरामी (सीरियाई) कहने से ''एदोमी'' कहना ठीक होगा।[21] एदोमियों को हराने से दाऊद को अकाबा की खाड़ी में पहुंच और दक्षिण के लिए व्यापारिक मार्ग मिल गए।

मुज़्य आयत फिर 2 शमूएल 8:14 के अन्त में मिलती है: ''और दाऊद जहां-जहां जाता था वहां वहां यहोवा उसको जयवन्त करता था।'' भजन संहिता 60 उसी सच्चाई का टीका है। यह नमक की तराई में होने वाले युद्ध के प्रारज़्भिक चरणों के दौरान लिखा गया था।[22] जिस समय यह लिखा गया उस समय एदोम के साथ युद्ध ठीक नहीं चल रहा था। इसका आरज़्भ होता है, ''हे परमेश्वर, तू ने हम को त्याग दिया, और हम को तोड़ डाला है; तू क्रोधित हुआ; फिर हम को ज्यों का त्यों कर दे'' (आयत 1)। दाऊद ने पूछा, ''मुझे गढ़ वाले नगर में कौन पहुंचाएगा? एदोम तक मेरी अगुआई कौन करेगा?'' (आयत 9)। भजन के अन्त में उस ने अपने ही प्रश्न का उज़र दिया: ''परमेश्वर की सहायता से हम वीरता दिखएंगे, ज़्योंकि हमारे द्रोहियों को वही रौंदेगा'' (आयत 12)। दाऊद उसे कभी नहीं भूला जिसने उसे विजय दिलाई थी।

एक राज्य संगठित हुआ (2 शमू. 8; 1 इति. 23-27)

2 शमूएल 8 का अंतिम भाग दाऊद के शासन को संक्षेप में बताता है: ''दाऊद तो समस्त इस्राएल पर राज्य करता था, और दाऊद अपनी समस्त प्रजा के साथ न्याय और धर्म के काम करता था'' (आयत 15)। राज्य में दूसरे लोग न्यायियों का काम करते थे, परन्तु अंतिम अपील राजा के पास ही की जाती थी। परमेश्वर का प्रतिनिधि होने के कारण, राजा निष्पक्ष तथा न्याय करने वाला था।[23]

2 शमूएल 8:16-18 बताता है कि दाऊद एक कुशल प्रशासक था जिसे पता था कि अधिकार किसे दिया जाना चाहिए। योआब को सेना का अधिकार दिया गया था। दाऊद के पास एक ''हिसाब रखने वाला'' था जो होने वाली घटनाओं का पूरा-पूरा विवरण रखता था और लोगों तक राजा के फरमान पहुंचाने के लिए उसका संदेशवाहक था। सादोक और अहीमेलेक महायाजकों के रूप में काम करते थे। (स्पष्टतया, कुछ समय के लिए इस्राएल में दो महायाजक थे: सादोक प्रारज़्भ में गिबोन में निवास पर,[24] जबकि अहीमेलेक यरूशलेम में संदूक की सेवा करता होगा।[25]) दाऊद के ''शूरवीरों'' (2 शमूएल 23:20-23) में से एक उसके निजी अंगरक्षकों पर प्रधान था, जो करेते के टापू[26] और पलिश्तीन के भाड़े के सैनिक थे।[27] सरकारी दस्तावेज लिखने और उन्हें संभालने की जिज़्मेदारी एक शाही सचिव की थी। दाऊद ने अपनी सरकार में अपने पुत्रों को भी इस्तेमाल किया। 2 शमूएल 8:18 उन्हें ''मंत्री'' जबकि 1 इतिहास 18:17 उन्हें ''राजा के पास मुखिये'' बताता है।[28]

यदि आपको जानना हो कि दाऊद कितना जबर्दस्त प्रशासक था, तो 1 इतिहास 23-27 पढ़ें। बहुत सा रिकॉर्ड हमें उसके द्वारा धार्मिक सेवाओं के लिए लेवियों को संगठित करने की बात बताता है (अध्याय 23-26), परन्तु दाऊद ने सेना को भी संगठित किया ताकि युद्ध के लिए हर समय सैनिक तैयार रहे (27:1-24)। ज़्योंकि खेतीबाड़ी का महत्व बहुत था इसलिए उसने भूमि के लिए ज़िम्मेदार भी लोगों को भी संगठित किया (27:25-31)। इतिहास दाऊद के स्टॉफ के दूसरे लोगों की सूची के साथ उसके सलाहकारों और उसके पुत्रों के शाही शिक्षक के बारे में बताकर बंद हो जाता है (27:32-34)। सफल लोग छोटी-छोटी बातों का भी ध्यान रखते हैं।

एक प्रतिज्ञा निभाई गई (2 शमू. 9)

2 शमूएल 9 में हमें ''दाऊद के पूरे जीवन की सबसे सुंदर और सबसे संवेदनशील बात मिलती है,''[29] जो दाऊद और योनातन की कहानी का सही चरम है।

दाऊद को समस्त इस्राएल पर राजा बने 10 वर्ष के लगभग हो चुके थे। उसका साम्राज्य स्थापित हो चुका था और फल-फूल रहा था; उसकी सरकार का प्रबन्ध ठीक चल रहा था। उसके पास विचार करने का समय था। इस दौरान उसे ध्यान एक वीर सिपाही का ध्यान आया, जो उसका मित्र और पूरे इस्राएल का राजकुमार था, और बिना किसी लालच या लोभ के उससे मन से प्रेम करने वाला था, और उसे उससे दो दशक से भी पहले की गई प्रतिज्ञा याद आई। जब वह जवान राजकुमार दाऊद के जान बचाने के लिए भागने से पहले एक खेत में खड़ा था तो योनातन ने उससे एक ही बिनती की थी: ''और न केवल जब तक मैं जीवित रहूं, तब तक मुझ पर यहोवा की सी ऐसा करना, कि मैं न मरूं; परन्तु मेरे घराने पर से भी अपनी कृपादृष्टि कभी न हटाना। वरना जब यहोवा दाऊद के हर एक शत्रु को पृथ्वी पर से नाश कर चुकेगा, तब भी ऐसा न करना'' (1 शमूएल 20:14, 15)। दाऊद ने शपथ ली थी कि वह योनातन और उसके घराने पर कृपादृष्टि रखेगा (1 शमूएल 20:17)।

दाऊद के लिए अपनी शपथ को पूरा करने का समय आ गया था। वह योनातन की तो कोई सहायता नहीं कर सका था, ज़्योंकि राजकुमार गिलबो पर्वत पर पलिश्तियों के तीरों से बेधा जा चुका था। परन्तु दाऊद अपनी प्रतिज्ञा योनातन के परिवार के किसी व्यज़्ति के साथ पूरी कर सकता था।

समस्या यह थी कि उन्हें ढूंढ़ा कैसे जाए। राजाओं की शज़्ति विरोधियों के हाथ चले जाने पर गद्दी से उतरे राजा के रिश्तेदार छुप जाते थे। ''दाऊद ने पूछा, ज़्या शाऊल के घराने में से कोई अब तक बचा है, जिसको मैं योनातन के कारण प्रीति दिखाऊं?'' (2 शमूएल 9:1)। दाऊद के अपने परिवार में शाऊल की एक बेटी थी, मीकल, परन्तु यदि उसे मालूम था कि उसके परिवार का कोई सदस्य जीवित है तो वह बता नहीं रही थी (उसे दाऊद पर भरोसा नहीं था)। अंततः, किसी ने शाऊल के सीबा नामक एक पुराने सेवक को ढूंढ़ा। दाऊद ने उससे पूछा, ''ज़्या शाऊल के घराने में से कोई अब तक बचा है, जिसको मैं परमेश्वर की सी प्रीति दिखाऊं?'' सीबा ने उज़र दिया, ''हां, योनातन का एक बेटा तो है,

जो दोनों पांवों से लंगड़ा है'' (2 शमूएल 9:3; NASB)।[30]

इस बेटे का नाम मपीबोशेत (या मरीज़्बाल[31]) था। अपने पिता और दादा की मृत्यु के समय वह पांच वर्ष का था (देखें 2 शमूएल 4:4)। जब उसकी धाई ने सुना कि शाउल और योनातन मारे गए हैं, तो वह यह सोच कर कि पलिश्ती उसे मार डालेंगे, या ज़्या पता इस्राएल का नया राजा उन्हें मरवा डाले, बहुत डर गई। बालक मपीबोशेत को उठाकर वह भाग गई, परन्तु जल्दी में वह गिर पड़ी। उसने बालक को उठाया और रात के अंधेरे में भाग निकली। कुछ देर बाद उसने देखा होगा कि उसके नन्हें पाव सूज गए हैं और कुछ चोट लगी है। लड़का जीवन भर के लिए लंगड़ा हो चुका था।

बालक मपीबोशेत ने माकीर नामक एक आदमी के घर शरण ली,[32] जो दाऊद के महल से दूर यरदन नदी के पूर्व में[33] गिलाद के इलाके लोदबार में रहता था। उस एकांत छोटे से ग्राम में, वह गुमनामी में बड़ा हुआ, शादी हुई और उसका एक बच्चा था।[34] उसे लगता था कि लोग उसके बारे में कुछ नहीं जानते। अब उसकी गुमनामी खत्म होने वाली थी।

> राजा ने [सीबा से] पूछा, वह कहां है? सीबा ने राजा से कहा, वह तो लोदबार नगर में अज़्मीएल[35] के पुत्र माकीर के घर में रहता है। तब राजा दाऊद ने दूत भेजकर उसको लोदबार से, अज़्मीएल के पुत्र माकीर के घर से बुलवा लिया (2 शमूएल 9:4, 5)।

सशस्त्र सिपाहियों में घिरे मपीबोशेत के मन के भय तथा चिंता की कल्पना करना कठिन नहीं है, जब दाऊद की गाड़ी उसे लोदबार से यरूशलेम तक 50 या इससे अधिक मील लेकर आई थी। यह सत्य है कि दाऊद ने कहा था कि वह ''प्रीति दिखाना'' चाहता है, परन्तु यह अपनी गद्दी के लिए खतरा बनने वालों को मिटाने का षड्यंत्र भी तो हो सकता था (बाद में राजा हेरोदेस द्वारा एक चाल खेली गई जब उसने ज्योतिषियों से कहा था कि वे उसे बताएं कि बालक यीशु कहां है ताकि वह भी ''उसको प्रणाम'' कर सके [मत्ती 2:8])। शायद मपीबोशेत ने दाऊद के साथ अपने पिता की मित्रता के बारे में और दाऊद की शपथ के बारे में सुन रखा था; शायद नहीं। जो भी हो, वह बीस साल पहले के लिए अपनी जान नहीं गंवाना चाहता था।

महल में पहुंचकर, मपीबोशेत लंगड़ाता हुआ[36] दाऊद के सामने आया। दाऊद ने उस डरे हुए जवान लंगड़े की ओर ध्यान से देखते हुए उस रौबदार राजकुमार और सिपाही का अज़्स ढूंढ़ा होगा जो उसका मित्र था। उसने मपीबोशेत को बुलाया।[37] वह जवान राजा के सामने मुंह के बल गिर गया[38] और कहने लगा, ''तेरे दास को ज़्या आज्ञा?'' (2 शमूएल 9:6)।

दाऊद को उस जवान के स्वर में भय सुनाई दिया। राजा ने उसे उठाया और फिर आश्वासन दिया: ''मत डर; तेरे पिता योनातन के कारण मैं निश्चय तुझ को प्रीति दिखाऊंगा, और तेरे दादा शाऊल की सारी भूमि तुझे फेर दूंगा; और तू मेरी मेज पर नित्य भोजन किया कर'' (2 शमूएल 9:7)।

कानूनी तौर पर, राजा बनने पर शाऊल की सब सज़्पज़ि दाऊद की हो चुकी थी। दाऊद के लिए उस सामान को शाऊल के वंशजों को देने की कोई नैतिक जिज़्मेदारी नहीं थी। ऐसा करना मपीबोशेत के पिता के लिए प्रेम व्यज़्त करना या कृपा करना था जो आज भी दाऊद के मन में था। रातों-रात मपीबोशेत भिखारी से धनी बन गया। परन्तु उसके लिए सबसे बड़ा सज़्मान दाऊद की मेज पर खाने के लिए निमंत्रण था। यह अधिकार राजा के पुत्रों को ही था। मपीबोशेत एक राजकुमार की तरह, शाही महल में लाया जाना था और उसे महत्व तथा सज़्मान मिलना था।

मपीबोशेत बहुत खुश हो गया। वह फिर राजा के सामने गिर गया, और कहने लगा, ''तेरा दास ज़्या है, कि तू मुझ, ऐसे मरे कुज़े[39] की ओर दृष्टि करे?'' (2 शमूएल 9:8)। मपीबोशेत को यकीन दिलाने और यह साबित करने के लिए उसकी पेशकश सही है, दाऊद ने सीबा को बुलाकर उसे मपीबोशेत की नई सज़्पज़ि का भंडारी बना दिया।[40]

शीघ्र ही मपीबोशेत और उसका परिवार राजधानी में रहने लगे। ''और मपीबोशेत यरूशलेम में रहता था; ज़्योंकि वह राजा की मेज पर नित्य भोजन किया करता था'' (2 शमूएल 9:13)। यह कृपा दृष्टि ही थी जिससे मपीबोशेत के जीवन में आशीष मिली। निस्संदेह इससे दाऊद को और भी आशीष मिली। मैं राजा को भोजन के समय, मपीबोशेत की ओर देखते, अपने उन अच्छे दिनों को याद करते जब वह और योनातन खेतों में इज़्ट्ठे घूमते थे, मुस्कराते देखता हूं।[41] दया करने से हमें वे आशीषें मिलती है जो हम दूसरों को देते हैं।

एक विजय मिली (2 शमू. 10-12; 1 इति. 19; 20)

दाऊद के ''अच्छे दिनों'' का भाग, अर्थात 2 शमूएल 1-10, पिछले अध्याय पर एक टिप्पणी के साथ समाप्त हो जाता है। अध्याय 8 में, ध्यान दिलाया गया था कि ''अज़्मोनियों'' ने दाऊद को भेंट भेजी थी (आयत 12), परन्तु उस अध्याय में हमें अज़्मोनियों की हार का कोई उल्लेख नहीं मिला था। अध्याय 10 से 12 अंतत: हमें अज़्मोनियों से हुए युद्ध का विवरण बताते हैं। इसके अलावा, अध्याय 8 में हम पढ़ते है कि ''अरामी [सूरिया के लोग] दाऊद के अधीन'' (आयत 6) हो गए थे। अध्याय 8 सूरिया के लोगों के साथ *कुछ* युद्धों के बारे में बताता है परन्तु अध्याय 10 ''बाकी कहानी'' अर्थात् खोलकर बताता है कि सूरिया के लोग अंतत: कब और कैसे उसके अधीन हुए।

अध्याय 9 तथा 10 के बीच के बंधन दयालुता का विषय है। दोनों में, दाऊद ने पुत्रों के साथ उसके पिताओं के कारण दया दिखाई। अध्याय 9 में दयालुता का उपहार धन्यवाद के साथ स्वीकार किया गया, परन्तु अध्याय 10 में यह बड़े रूखेपन से मोड़ दिया गया।

अध्याय 10 आरज़्भ होता है:

> इसके बाद[42] अज़्ज़ोनियों का राजा मर गया, और उसका हानून नाम पुत्र उसके स्थान पर राजा हुआ। तब दाऊद ने यह सोचा, कि जैसे हानून के पिता नाहाश ने मुझ को प्रीति दिखाई थी, वैसे ही मैं भी हानून को प्रीति दिखाऊंगा (आयतें 1, 2)।

हम नहीं जानते कि अज़्मोनियों के राजा ने दाऊद पर ज़्या दया की थी। शायद जिस समय दाऊद भगौड़ा था तो उस ने उस पर दया की थी।[43] जो भी हो, दाऊद अब उस का बदला उस पर दया करके देना चाहता था।

दाऊद ने हानून से सहानुभूति प्रकट करने के लिए अज़्मोनियों की राजधानी रज़्बा में अपने कर्मचारी भेजे।[44] परन्तु राजा के पुत्रों ने उससे कहा कि दाऊद के आदमी किसी प्रकार की सहानुभूति के कारण नहीं, बल्कि जासूसी करने आए हैं। अज़्मोनियों के राजा की प्रतिक्रिया दाऊद के लिए दोहरा अपमान थी। ''इसलिए हानून ने दाऊद के कर्मचारियों को पकड़ा, और उनकी आधी-आधी दाढ़ी और आधे वस्त्र, अर्थात नितज़्ब तक कटवा कर, उनको जाने दिया'' (2 शमूएल 10:4)। यद्यपि कुछ आदमी ज़्लीन-शेव थे, परन्तु सामान्य तौर पर दाढ़ी मूंछ को मर्दानगी की पहचान माना जाता था। उनमें से हर एक की आधी दाढ़ी कटवा कर राजा ने संदेश भेजा कि वे मर्द से कुछ कम हैं। दूसरा अपमान नितज़्बों के बीच में से कपड़ा काट कर उन्हें नंगा करना था। युद्ध-बन्दियों के साथ ऐसा व्यवहार किया जाता था (देखें यशायाह 20:4)।

घबराए और मुंह लटकाए दाऊद के कर्मचारी वापस लौट आए। दाऊद आग-बबूला हो गया पर उसने अपने आप को तब तक रोके रखा जब तक उसे यह पता न चला कि अज़्मोनी लोग युद्ध की तैयारी कर रहे हैं और उन्होंने उनके साथ युद्ध करने के लिए तैंतीस हज़ार और लोगों को भाड़े पर लिया है।[45] (उनका दो-तिहाई से अधिक सीरियाई लोग थे[46])। दाऊद ने तुरन्त योआब तथा युद्ध में निपुण सिपाहियों को युद्ध के मैदान में भेज दिया।

रज़्बा में पहुंच कर योआब ने पाया कि उसे दो मोर्चों से लड़ना पड़ेगा ज़्योंकि अज़्मोनी तो राजधानी नगर की रक्षा कर रहे थे, जबकि दूसरी टुकड़ियां मैदान से आक्रमण कर रही थीं। योआब के लिए यह शायद सब से अच्छा अवसर था। भाड़े के सिपाहियों से लड़ने के लिए उसने अपने चुनिन्दा लोगों को भेज दिया। शेष को उसने अज़्मोनियों से लड़ने के लिए अपने भाई अबीशै के साथ भेज दिया। फिर उसने अपने आदमियों को इकट्ठे करके उन्हें आदेश दिया:

> ... यदि अरामी मुझ पर प्रबल होने लगें, तो तू मेरी सहायता करना; और यदि अज़्मोनी तुझ पर प्रबल होने लगेंगे, तो मैं आकर तेरी सहायता करूंगा। तू हियाव बांध, और हम अपने लोगों और अपने परमेश्वर के नगरों के निमिज़ पुरुषार्थ करें; और यहोवा जैसा उसको अच्छा लगे वैसा करे (2 शमूएल 10:11, 12)।

यह योआब जैसा तो नहीं, परन्तु ज़बर्दस्त भाषण था, जिससे अगुवे सभी सीख सकते हैं। सहयोग की आवश्यकता, प्रोत्साहन की आवश्यकता, दूसरों की देखभाल की चिन्ता की आवश्यकता, और परमेश्वर की इच्छा केसाथ मिलने का आवश्यकता ज़बर्दस्त प्रेरणा हैं। इस भाषण के बाद, मैं योआब को कुछ देर के लिए अपना सिर झुकाए खड़ा देखता हूं। फिर मैं वादी में उसके आदमियों के चिल्लाने का शोर सुनता हूं। फिर अन्त में मैं उन्हें अपने शत्रु

को ललकारते हुए इस्राएल की महिमा, तथा परमेश्वर की महिमा के लिए आंखें में शोले ले कर युद्ध में कूद पड़े।

प्रभु ने उस दिन योआब को विजय दिलाई। सीरियाई इधर उधर बिखर गए; अज़्मोनी रज़्बा में भाग गए। परमेश्वर उनका साथ देता है जो उस में भरोसा रखते हैं।

जब हारे हुए सीरियाई अपने देश में भाग गए तो सीरियाई अगुवे[47] बहुत क्रोधित हुए। सूरिया के लोगों ने फरात नदी के पार से भी भरती करते हुए इस्राएल के विरुद्ध एक बहुत बड़ी सेना तैयार कर ली।

जब दाऊद को पता चला कि इतनी बड़ी सेना आ रही है, तो उसे मालूम था कि सेना किसी दूसरे के हाथ में सौंपने का नतीजा बहुत खतरनाक होने वाला था। सीरियाई सेना को रोकने के लिए दाऊद ने स्वयं ''इस्राएलियों को इकट्ठा किया, और यरदन के पार होकर ... पहुंचा'' (2 शमूएल 10:17)। एक बार फिर परमेश्वर ने इस्राएल को बड़ी विजय दिलाई। सीरियाई सेनापति सहित उनके सैंतालीस हज़ार लोग मारे गए। सीरियाई लोगों ने यह देज़ कर ''कि हम इस्राएल से हार गए हैं, ... इस्राएल के राजा के साथ संधि की, और उसके अधीन हो गए'' (2 शमूएल 10:19)।[48]

इससे रज़्बा का काम अधूरा ही था, जहां अज़्मोनी सेना ने मोर्चे लगाए थे। अगले बसन्त पर, रास्ता खुलते ही दाऊद ने रज़्बा पर कज़्जा करने के लिए योआब को भेजा, और स्वयं यरूशलेम में रहा (2 शमूएल 11:1)। (यह तब की बात है, जब दाऊद ने बतशेबा के साथ पाप किया था। कहानी के उस भाग को अभी हम छोड़ देते हैं। हम इतिहास की पुस्तक के लेखक का अनुसरण करेंगे, जिसने अज़्मोनियो के साथ युद्ध के बाद तुरन्त कहानी को समाप्त कर दिया [1 इतिहास 20:1-3]।)

योआब ने पहले रज़्बा पर सीधे आक्रमण करने की कोशिश की, परन्तु शहरपनाह को ढहाने में असफल रहा (2 शमूएल 11:1, 17-24)। फिर उसने नगर के जल स्रोत को घेर कर कज़्जा कर लिया।[49] उनकी पानी की सप्लाई काट कर, योआब को मालूम था कि वहां के लोगों को आत्मसमर्पण करने में अधिक समय नहीं लगेगा। उसने दाऊद का भी बुला लिया: ''सो अब रहे हुए लोगों को इकट्ठा करके नगर के विरुद्ध छावनी डालकर उसे भी ले ले: ऐसा न हो कि मैं उसे ले लूं, और वह मेरे नाम पर कहलाए'' (2 शमूएल 12:28)।[50]

दाऊद रज़्बा में आया और उसने अंतिम आज्ञा में दी। जब नगर पर विजय पा ली गई तो अज़्मोन के राजा का मुकुट यह दर्शाने के लिए कि उनका नया शासक दाऊद है,उसके सिर पर रखा गया।[51] फिर दाऊद ...

> ... ने उसके रहने वालों को निकालकर आरों, लोहे के हेंगों और लोहे की कुल्हाड़ियों के काम पर लगाया और उनसे ईंट के पजावे में परिश्रम कराया; और अज़्मोनियों के सब नगरों से भी उसने ऐसा ही किया। तब दाऊद अपनी सारी सेना लेकर यरूशलेम को लौट गया (12:31; NIV)।[52]

जहां तक बाइबल बताती है, दाऊद के जीवनकाल में आस-पास के देशों में यह अंतिम बड़ी विजय थी।

बहुत पहले, परमेश्वर ने इब्राहीम से प्रतिज्ञा की थी: ''कि मिस्र के महानद से लेकर परात नाम बड़े नद तक जितना देश है ... मैं ने तेरे वंश को दिया है'' (उत्पत्ति 15:18)। दाऊद के द्वारा, अंत में परमेश्वर ने उस प्रतिज्ञा को पूरा कर दिया। दाऊद का साम्राज्य दक्षिण में मिस्र की नदी से;[53] उज़र में फरात नदी, पश्चिम में महा (भूमध्य) सागर से पूर्व में यरदन नदी तक फैला हुआ था (नोट 1 राजा 4:21-24)। दाऊद साठ हजार वर्ग मील पर राज्य करता था। संसार की सज़्पज़ि के नज़्बे प्रतिशत जितना उसके अधीन था।

परमेश्वर ने बैतलहम के चरवाहे लड़के से उसके स्वप्न से भी कहीं अधिक सफल बनाया।

जो वास्तव में महत्वपूर्ण है, उसे ज़ोए बिना सफलता कैसे पाएं

दाऊद के शिखर तक चढ़ने की कहानी में ज़्या सबक है? विशेषकर, जो सचमुच महत्वपूर्ण है जिसमें हमारे प्राण भी शामिल हैं, उसे खोए बिना हम सफल कैसे हो सकते हैं? दाऊद की सफलता पर विचार करते हुए, मैंने पांच सुझाव तैयार किए हैं:

(1) अपने उद्देश्य को न भूलें।

सफलता से अज़्सर बदनामी और प्रसिद्धि मिलती है, जिस कारण दो-चिज़ापन आता है, जो असफलता का कारण बनता है। एक से एक उदाहरण हो सकते हैं: टीवी तथा फिल्म स्टार जो सफलता को सहार नहीं पाते, शराब और नशे आदि करके अपना कैरियर तबाह कर लेते हैं: राष्ट्रीय प्रतियोगिता जीतने वाली स्पोट्र्स टीमें, अगले साल असफलता के कारण बड़े बुरे दौर से गुजरती हैं और सज़ा का सवाद चख चुके भ्रष्ट राजनीतिज्ञ।

अगले भाग में, हम देखेंगे कि दाऊद अपने उद्देश्य में असफल हो गया, और उस कारण विनाश हुआ, परन्तु यहां तक, हमने दाऊद को उन चुनौतियों पर ध्यान लगाते हुए देखा है जो परमेश्वर की ओर से उसे दी गई थीं: सिंहासन पर उसकी प्रतिनिधिता करना, साम्राज्य स्थापित करना और उस कौम की रक्षा करना, जिसके द्वारा मसीहा आने वाला था। ज़्योंकि दाऊद ने अपना ध्यान उसी पर लगाए रज़ा इसलिए उसने उन चुनौतियों को बड़ी अच्छी तरह पूरा किया।

लक्ष्य निर्धारण करने के बारे में हम बहुत कुछ सुनते हैं। यदि लक्ष्य सही है तो लक्ष्य निर्धारण करना अच्छा है। हमें अपनी प्राथमिकताओं को स्पष्ट रखना चाहिए, जिसमें परमेश्वर पहले, फिर दूसरे लोग (जिसमें परिवार के लोगों का नाम सबसे ऊपर हो) और अंत में अपने आप को (मज़ी 22:37, 38; 6:33)। परन्तु लक्ष्य ठहरा लेने के बाद, असफल होना आसान है। हम भूल जाते हैं कि जीवन ज़्या है। *काम* आवश्यक है, परन्तु महत्वपूण बातों को भी न ज़ूलें।

पौलुस के प्रसिद्ध कथन को याद रखें: ''केवल यह एक काम करता हूं, कि जो बातें

पीछे रह गईं हैं उनको भूलकर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है'' (फिलिप्पियों 3:13, 14)। ''एक काम करता हूं'' वाक्यांश पर ध्यान दें। न ''एक दर्जन काम करने का प्रयास करता हूं,'' न ''एक सौ बातों में रुचि रखता हूं,'' बल्कि '' *एक* काम करता हूं।'' पौलुस ध्यान लगाने वाला, अर्थात मसीह पर ही ध्यान लगाने वाला व्यक्ति था।

यह निर्णय लेने के लिए कि परमेश्वर आपके जीवन में क्या करना चाहता है विचार करने तथा प्रार्थना में समय बिताएं। उन लक्ष्यों तथा उद्देश्यों को न भूलें। ध्यान लगाए रखें।

(2) अपने कर्ज को न भूलें।

यदि आपको कोई सफलता मिली है, तो उन लोगों के ऋण को न भूलें जिनके द्वारा यह सम्भव हुआ है। अक्सर, सफल लोग ''इतने बड़े'' बन जाते हैं कि उन्हें वे ''छोटे लोग'' याद ही नहीं रहते जिन्होंने उन्हें वहां पहुंचने में सहायता की होती है।

दाऊद ने अपनी सफलता के लिए दूसरे लोगों के योगदान को स्वीकारा। मैं आपको फिर 2 शमूएल 23 में उसके द्वारा ''सम्मानित लोगों'' अर्थात उसके ''शूरवीरों'' की उसकी सूची और उनके यादगारी काम याद दिलाता हूं। परन्तु सबसे बड़कर दाऊद ने अपनी विजयों के लिए श्रेय *यहोवा* को दिया। भजन संहिता 60 में उसने कहा: '' *परमेश्वर* की सहायता से हम वीरता दिखाएंगे, क्योंकि हमारे द्रोहियों को वही रौंदेगा'' (आयत 12)। दाऊद ने परमेश्वर के लिए अपनी विजयों से धन अर्पित करके अपना आभार व्यक्त किया।

पौलुस एक और व्यक्ति था जिसने अपने जीवन में लोगों तथा परमेश्वर के योगदान को माना। उदाहरण के लिए रोमियों 16 में उसने फीबे के बारे में कहा, ''... वह भी बहुतों की वरन मेरी भी उपकारिणी हुई है'' (आयतें 1, 2)। इसी पुस्तक में पहले पौलुस ने कहा था कि परमेश्वर का आत्मा ''हमारी दुर्बलता में सहायता करता है'' (रोमियों 8:26)। परमेश्वर का भय रखने वाली एक बहन ने पौलुस की सहायता की, परमेश्वर ने पौलुस की सहायता की और पौलुस ने सहायता के इन दोनों स्रोतों के बारे में हमें बताना चाहा।

चाहे कितनी भी छोटी क्यों न हो, हमारी किसी भी सफलता में दूसरों को योगदान अवश्य रहता है। हमें उस योगदान को मानना चाहिए। हो सकता है कि हमें मंच पर खड़े हो कर ''मैं अपने माता-पिता, शिक्षकों, आदि का धन्यवादी हूं'' कहने का अवसर कभी न मिल पाए, परन्तु हम उन लोगों को यह बता *सकते* हैं कि हम उनके कितना आभारी है और उनका हमारे लिए कितना महत्व है। दो शब्द तारीफ के, फोन पर हो या लिखकर हों जबरर्दस्त प्रोत्साहन देने वाले होते हैं।

सबसे बढ़कर, हमें यह समझना आवश्यक है कि सफलता *परमेश्वर* ही दिलाता है। जब किसी बड़ी खेल प्रतिस्पर्धा में कोई जीतता है, तो उससे पूछा जाता है कि उसने यह जीत कैसे हासिल की। जीतने वाला अपने लक्ष्य ठहराने तथा कठिन प्रशिक्षण के बारे में बताता है जैसे कि उसे सफलता इन्हीं से मिली हो। निश्चय ही, स्व-अनुशासन आवश्यक था,

परन्तु उसी की तरह सैकड़ों और लोगों ने भी तो निश्चय किया हुआ था और वैसे ही कठिन प्रशिक्षण से गुजरे थे, परन्तु वे *नहीं* जीत पाए। वही ज़्यों जीता ? पहला और सबसे महत्वपूर्ण कारण यह था कि *परमेश्वर ने* उसे विलक्षण गुण तथा योग्यताएं दीं। उसने उन गुणों को विकसित किया, परन्तु परमेश्वर ने उसे वह क्षमता दी जो उसने हम में से बहुतों को नहीं दी।

हमें मानना चाहिए कि किसी भी प्रकार की सफलता, चाहे वह कोई टेस्ट पास करना हो, टीम बनानी हो, स्कूल की परीक्षा में पास होना हो, नौकरी लेनी हो, जीवन-साथी ढूंढ़ना हो, घर बनाना हो, माता-पिता बनना हो, तरज़्की पानी हो, बीमारी से ठीक होना हो, या ओलंपिक में 100 मीटर की दौड़ जीतना हो, प्रभु की ओर से ही मिलती है। ''हर एक अच्छा वरदान और हर एक उज़म दान ऊपर ही से है'' (याकूब 1:17)। हो सकता है कि उस फुटबाल खिलाड़ी की तरह जो एक सैकण्ड के लिए नीचे झुककर पूरे देश को धन्यवाद देता है, हमें धन्यवाद देने का अवसर न मिले, परन्तु हम परमेश्वर के धन्यवाद में अपनी आवाज उठाकर अपने लिए उसकी भलाई को दूसरों को बता सकते है। और दाऊद की तरह हम भी जो कुछ हमारे पास है और जो कुछ हम हैं उस सब को उसे समर्पित कर सकते है जिसने हमें सब कुछ दिया।

(3) अपनी प्रतिबद्धता को न भूलें।

शिखर पर पहुंचकर, बहुत से लोग अपनी प्रतिज्ञाओं तथा वचनों को भूल जाते है। एक आदमी को लग सकता है कि संघर्ष के वर्षों के दौरान जिस स्त्री से उसका विवाह हुआ था अब वह उसके लिए रुकावट है, उसे अपने जीवन से निकाल देना चाहिए। पुराने बिजनेस पार्टनर से किया गया समझौता पूरा करना महंगा लग सकता है, इसे यह कहकर कि ''हमने कभी किसी समझौते पर हस्ताक्षर किए ही नहीं'' टाल दिया जाता है।

जब दाऊद इस स्थिति पर पहुंचा, जहां से वह ऐसा कर सकता था, तो उसने बीस या उससे अधिक वर्ष पूर्व की गई शपथ को निभाया। यदि दाऊद यह सोच कर कि शाऊल ने उसके साथ कैसा व्यवहार किया था, अपनी शपथ को आसानी से भूल भी जाता तो लोग उस पर आरोप न लगाते। तो भी दाऊद ने इसे परमेश्वर की उपस्थिति में की गई एक पवित्र शपथ के रूप में देखा,[54] जिसे तोड़ा नहीं जाना चाहिए। इस कारण उसने योनातन के पुत्र को ढूंढ़कर उसे सज़्मानित किया।

हम सब ने किसी न किसी प्रकार का वचन दिया होता है। हम में से बहुत से लोग मसीही हैं और अपने विश्वास का अंगीकार करने तथा बपतिस्मा लेने के समय हमने अपना जीवन समर्पित किया है। हम में से बहुतों ने किसी पत्नी या पति से ''प्रेम करने, आदर देने तथा प्रिय समझने'' के लिए जीवन भर प्रतिबद्ध होने की शपथ खाई थी (देखें मज़ी 19:3-9)। हमने और भी वचन दिए होंगे। गिनती 30:2 पर विचार करें: ''जब कोई पुरुष यहोवा की मन्नत माने, तो वह अपना वचन न टाले; जो कुछ उसके मुंह से निकला हो उसके अनुसार वह करे।'' अपने वचन को निभाए बिना हम निष्ठावान नहीं रह सकते।

(4) यह न भूलें कि सफलता आती जाती है

एक दिन आप ''कुछ'' हो सकते हैं और अगले दिन ''कुछ नहीं।'' हो सकता है कि एक दिन आपके पास लाखों रुपया हो और अगले दिन पैसा भी नहीं हो। एक दिन आप कज़्पनी के डायरेज़्टर हों और अगले दिन चौकीदार। एक दिन स्वस्थ्य हों और अगले दिन इमरजेंसी में अस्पताल में दाखिल हो। आज आप गौरवान्वित माता-पिता हों और कल निराश माता या पिता।

श्रेष्ठ व्यज़्ति भी कभी शिखर पर नहीं रहते। चबाने की आवाज कम होती-होती बिल्कुल खत्म हो जाती है। इस वर्ष की मिस यूनिवर्स का स्थान अगले वर्ष की मिस यूनिवर्स ले लेती है। कज़्पनी के सीईओ (मुज़्य कार्यकारी अधिकारी) को दावत के साथ पहरेदार दिए जाते हैं, बाद में वह बगीचे को सज़्भालता है। जो आज जवान दिलों की धड़कन हैं उनकी जगह कल कोई और नया सितारा ले लेगा।

दाऊद के लिए सफलता बाद के जीवन में चैन से आनंद करने के लिए सजाने के लिए रखने वाली नहीं बल्कि निरन्तर संघर्ष करने वाली बात थी। जिन लोगों पर उसने विजय पाई थी वे फिर उसे परेशान करने के लिए फिर उठ खड़े होते थे। प्रबंधन बिगड़ जाते थे और फिर ठीक किए जाते थे। एक घंटे के अविवेक, कुछ क्षणों की बेकाबू वासना ने दाऊद को चोटी से नीचे गिरा दिया और उसके जीवन को पीड़ा से भर दिया। जीवन की तरह ही, सफलता भी, ''मानो भाप समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो जाती है'' (याकूब 4:14)।

यदि प्रभु आपको जीवन में सफलता देता है, तो इसका भरपूर आनन्द लें, परन्तु हर बात को जहां जो स्थान मिलना चाहिए वही दें ताकि जब सफलता झरोखे में से उड़ जाए, तो आप उसी झरोखे से बाहर कूदने की परीक्षा में न पड़ें। अंत में, याद रखें, केवल उसी सफलता का लाभ है जिसके लिए परमेश्वर कहे, ''धन्य हे अच्छे विश्वास योग्य दास'' (मज़ी 25:21)।

(5) अपने अभेद्य होने को न भूलें।

मैं उस घटना का पूर्व अनुमान लगाए बिना जिससे दाऊद की सफलता रात में ही नग्ण्य हो सकती थी, इस पाठ को समाप्त नहीं कर सकता। एक प्रवज़्ता[55] ने एक बार सबसे सफल लोगों के गिरने के निज़्न कारण बताए: "silver," "sloth," "sex," या "self" अर्थात ''धन,'' ''आलस्य,'' ''काम,'' या ''स्वार्थ।'' दाऊद के लिए धन कोई बड़ी परीक्षा नहीं थी परन्तु अन्य तीन बातों ने लगभग उसे बर्बाद कर दिया। दाऊद एक भावप्रवण व्यज़्ति था। परमेश्वर की महिमा करने, परमेश्वर के लिए युद्ध लड़ने, या भविष्य के लिए योजनाएं बनाने में उसका यह गुण सराहनीय था। परन्तु एक सुंदर स्त्री को देखने पर, उसकी यह सामर्थ उसकी निर्बलता बन गई। जब एक शाम खालीपन, वासना, और स्वार्थ ने चारों ओर से उसे घेर लिया, तो दाऊद एक झटके में गिर गया जिसका ताप उसके पूरे राज्यकाल में रहा।

दाऊद को अपनी अभेद्यता या कमज़ोरी का पता नहीं होगा, या यदि पता था भी, तो उसने अपने बचाव के लिए कोई पर्याप्त सावधानी नहीं बरती। याकूब ने चेतावनी दी है, ''प्रत्येक व्यक्ति *अपनी ही* अभिलाषा से खिंचकर और फंसकर परीक्षा में पड़ता है'' (याकूब 1:14)। हम में से हर कोई अभेद्य है अर्थात हम कमज़ोर हैं। हम में से हर एक की अपनी-अपनी कमजोरी है। आवश्यक नहीं कि जो मेरी कमजोरी है वही आपकी भी हो। हर एक को अपनी कमजोरियों के प्रति चौकस रहना चाहिए ताकि परीक्षा आने पर वह अपना बचाव कर सके। एक बात पज़्की है कि *शैतान* जानता है कि आप कहां पर कमजोर हैं और वह उसका लाभ उठाने का हर प्रयास करेगा।

यदि आपने पहले ध्यान नहीं दिया, तो अभी अपनी कमजोरियों का पता लगाने का गंभीर काम करें; फिर देखें कि उन बातों में परीक्षा से बचने के लिए आप ज़्या कर सकते हैं।

सारांश

हम केवल सोने के तमगे जीतने वालों, अच्छा वेतन लेने वालों या *टाइम* पत्रिका के मुज़पृष्ठ पर आने वालों की ही बात नहीं कर रहे है। ये तथ्य कि आज हम यहां हैं, हमारे तन पर कपड़े हैं और सांस ले रहे हैं इस बात की घोषणा करते हैं कि परमेश्वर ने हमें कुछ सफलता दी अवश्य दी है। आइए अब दाऊद की सफलताओं से सीख लें: एक ओर तो परमेश्वर को महिमा दें, दूसरी ओर सफलता से मिलने वाले खड्डों से बचें।

यीशु ने एक बार अपने चेलों को चुनौती दी थी, ''यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करें, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे ज़्या लाभ होगा?'' (मज़ी 16:26)। मुझे नहीं लगता कि यीशु के प्रश्न को विस्तार देकर हम इस पद से अन्याय करेंगे: उस पुरुष को ज़्या लाभ होगा जो पूरे संसार को तो प्राप्त कर ले, पर उसका तलाक हो जाए? उस स्त्री को ज़्या लाभ होगा जो सारे संसार को प्राप्त कर ले, पर अपने बच्चों को खो दे? उस पुरुष को ज़्या लाभ होगा जो सारे संसार को तो प्राप्त कर ले पर अपने चरित्र को खो दे? उस स्त्री को ज़्या लाभ होगा जो सारे संसार को तो प्राप्त कर ले, पर उसका प्रभाव खत्म हो जाए? इन प्रश्नों का उज़र एक ही है: कोई लाभ नहीं होगा। यदि आप उसको खो देते हैं जो सबसे महत्वपूर्ण हैं तो संसार के सबसे सफल व्यक्ति होने पर भी आप सबसे बड़े असफल होंगे।

प्रवचन नोट्स

मपीबोशेत की कहानी बड़ी संवेदनशील है; इसका इस्तेमाल रुकावटों पर काबू पाने के साथ रुकावटों वाले लोगों के प्रति हमारे व्यवहार के आधार के रूप में किया जा सकता है।

इस कहानी का इस्तेमाल *अनुग्रह से* उद्धार पर पाठ के लिए भी किया जा सकता है। इस जवान के साथ दाऊद के व्यवहार (निजी गुण के कारण नहीं बल्कि जो कुछ योनात ने किया था उसके कारण) की तुलना हमारे साथ परमेश्वर के व्यवहार से (हमारे गुण के कारण नहीं बल्कि जो कुछ यीशु ने हमारे लिए किया है) करें।

चतुर पाठक 2 शमूएल 10 में योआब के भाषण के सज़्बन्ध में मेरी चार ''*C*यों''

("cooperation," "courage," "concern," और "compliance") पर विचार करें। कार्य तथा विजय के लिए किसी मंडली को प्रेरित करने के लिए यह भाषण एक ज़बर्दस्त प्रवचन हो सकता है।

कई भजन सहायक पाठ हो सकते है। दाऊद के "विजय" के भजनों को देखें। कुछ लोगों का मानना है कि भजन 18 दाऊद के हमात के राजा के पास आने के समय लिखा गया था (विशेषकर 43 से 45 आयतों पर ध्यान दें)। भजन 60 का इस पाठ केसाथ सीधा सज़्बन्ध है।

टिप्पणियां

[1]अध्याय 8 के आरज़्भिक शज़्द कालक्रमानुसार नहीं लगते, परन्तु नए विषय की ओर बढ़ने के लिए एक पुल का काम करने वाला वाज़्यांश है। [2]KJV में मूल इब्रानी शज़्द है: "दाऊद ने मेथेगज़्माह को पलिश्तियों के हाथ से छुड़ा लिया।" "मेथेग-अज़्माह" का मूल अर्थ "मातृ नगर की लगाम" (देखें ASV)। इस प्रकार, दाऊद ने "मातृ [प्रधान] नगर की लगाम [नियंत्रण] ले ली।" संसार के उस भाग में आज भी "मां" का इस्तेमाल "मुज़्य" या "सबसे बड़े" के लिए होता है: "सब युद्धों की जननी या मां।" [3]इतिहास का लेखक हमें "मातृ नगर" *गत* को बताता है: "दाऊद ने ... गांवों समेत गत नगर को ... छीन लिया" (1 इतिहास 18:1)। [4]हम केवल अनुमान लगा सकते हैं कि ये युद्ध कब हुए। कुछ लोगों का मत है कि 2 शमूएल 21 के चार युद्ध दाऊद के भगौड़ा होने के समय या केवल यहूदा पर दाऊद के साढ़े सात वर्ष के राज्यकाल अर्थात 2 शमूएल 5 के निर्णायक युद्धों और 2 शमूएल 8:1 के स्पष्ट शज़्दों के दौरान हुए। दूसरों का मानना है कि वे दाऊद के बाद के वर्षों में हुए, जब पलिश्ती बार-बार इस्राएल को तंग कर रहे थे, जिससे यह वर्णन करने के लिए सहायता मिलेगी कि दाऊद ज़्यों "थक" गया था (2 शमूएल 21:15)। [5]यह भाला गोलियत के भाले जितना भारी नहीं था, परन्तु इसका मुंह किसी भी घान (बड़ा हथौड़ा) से भारी था! [6]यह "एक *नई* तलवार" थी (2 शमूएल 21:16)। [7]2 शमूएल 21:19 कहता है कि उस दानव का नाम गोलियत था; 2 इतिहास 20:5 कहता है कि वह गोलियत का भाई लहमी था। KJV का मानना है कि 2 शमूएल में "का भाई" छूट गया है और उसमें इसे शामिल किया गया है। परन्तु सज़्भव है कि "गोलियत" परिवार के सब लोगों के लिए इस्तेमाल होता हो और लहमी को "एक" गोलियत माना जाता हो, जो "उस" गोलियत का भाई था। कुछ लोग दाऊद के बजाय किसी दूसरे द्वारा गोलियत नाम के दानव को मारने की बात करते हैं और सुझाव देते है कि दाऊद का दूसरा नाम "एल्हानान" था। ऐसा मानना कठिन लगता है ज़्योंकि एल्हानान के पिता का नाम याईर था (1 इतिहास 20:5) और उसका नाम दाऊद के शूरवीरों की सूची में मिलता है (2 शमूएल 23:24)। यह घटना स्पष्टतया गोलियत के साथ दाऊद के युद्ध के कई साल बाद घटी। [8]समागम के परिणामस्वरूप मोआबी अस्तित्व में आए (तुलना करें उत्पज़ि 19:37)। [9]बाइबल इस बारे में स्पष्ट नहीं बताती कि यह सिपाहियों का दो तिहाई था, या पुरुषों का या कुल जनसंज़्या का। [10]संभवत:, एक अपवाद अज़्मोनी था (बाद में 2 शमूएल 12:31 पर नोट्स देखें)।

[11]रॉबर्ट जेमियसन, ए.आर. फॉसेट, एण्ड डेविड ब्राउन, *कमैन्ट्री ऑन द होल बाइबल,* संशो. संस्क. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ॉन्डर्वन पज़्लिशिंग कं., 1961), 233. [12]2 शमूएल 8:12 पर ध्यान दें। दूसरा शमूएल 10-12 अज़्मोनियो पर दाऊद की विजय का विवरण देता है। [13]अज़्मोनियों का अस्तित्व भी मेल के परिणामस्वरूप हुआ (तुलना करें उत्पज़ि 19:38)। [14]इतिहास की पुस्तकों में समानांतर आयतें पढ़ने पर संज़्या, नामों आदि में अंतर मिलेगा। ज़्या गणना के अलग-अलग ढंग इस्तेमाल किए जाते हैं? ज़्या एक ही व्यज़्ति तथा स्थान के लिए अलग-अलग नामों का इस्तेमाल किया जाता हैं? ज़्या कोई आयत कई सालों बाद अचानक बदल गई? हम इन

प्रश्नों का उज़र नहीं दे सकते। अपने उद्देश्य के लिए, हम सामान्यता 2 शमूएल में दी गई संज़्याओं तथा पदनामों का इस्तेमाल करेंगे। [15]उसने घोड़ों की पिछली टांगों की नस काटकर, उन्हें ''लंगड़ा'' कर दिया, जिससे वे युद्ध के लिए नकारा हो गए। पशुओं के अधिकार की बात करने के आज के समय में यह बड़ा चुभने वाला लगता है, परन्तु उन्हें मारने से यह अच्छा था। दाऊद के लिए वे किसी काम के नहीं थे (परमेश्वर ने कहा था कि राजा को ''बहुत घोड़े'' नहीं रखने चाहिए [व्यवस्थाविवरण 17:16], इसके अलावा इस्राएल के पहाड़ी देश में रथ भी उपयोगी नहीं थे), और वह नहीं चाहता था कि शत्रु उन्हें युद्ध में दोबारा इस्तेमाल कर सके। दाऊद के पास एक सौ रथ थे: पता नहीं ज़्यों (भजन संहिता 20:7 में दाऊद के अपने शज़्दों पर ध्यान दें)। ऐसा करके उसने सज़्भवतया व्यवस्थाविवरण 17:16 का उल्लंघन किया था। (शायद यहीं पर अबशालोम को रथ और घोड़े मिले थे [2 शमूएल 15:1]; जहां तक बाइबल बताती है, शाही परिवार में रथ का इस्तेमाल करने वाला पहला व्यज़्ति अबशालोम ही था।) [16]NASB के आरज़्भिक संस्करणों में "Syrians" है; बाद के संस्करणों में "Arameans" अर्थात अरामी है, जो सामान्यता सीरियाई लोगों को कहा जाता है। सोबा के राज्य में भी अरामी अर्थात सीरियन या सूरिया वासी थे (2 शमूएल 10:6)। [17]हमात दमिश्क के उज़र में लगभग सौ मील दूर था। [18]इससे संकेत मिलता है कि हमात के राजा ने अपने आपको दाऊद के शासन के अधीन रखते हुए, उससे समझौता किया। [19]दाऊद ने पहले अमालेकियों को हराया था (1 शमूएल 30)। [20]भजन संहिता 60 के आरज़्भ में टिप्पणियां योआब की विजय को समर्पित हैं। इतिहास के लेखकने इसे योआब के भाई अबीशह के लिए कहा (1 इतिहास 18:12)। कुछ लोगों को यह परेशान करता है, परन्तु *दाऊद की* सेना *योआब* के अधीन में लड़ी, और स्पष्टतया *अबीशै* ने उस विशेष आक्रमण में अगुआई की जिसमें विजय प्राप्त हुई।

[21]सप्तति अनुवाद, सीरियाक वर्जन, और ग्यारह इब्रानी हस्तलेखों में 2 शमूएल 8:13 में ''एदोमी'' है। [22]भजन से पहले की टिप्पणियां देखें। [23]इसे चिह्नित कर लें। यह लोगों का दिल जीतने के लिए अबशालोम का प्वाइंट था (अगले भाग में ''मनुष्य जो बोता है'' देखें)। [24]1 इतिहास 16:39। बाद में, सादोक को संदूक का जिज़्मा सौंपा गया था (2 इतिहास 15:24-29)। 1 इतिहास 6:3-8, 50-53 के अनुसार सादोक हारून का वंश था (1 इतिहास 24:3 भी देखें)। [25]अहीमेलेक भी हारून का वंशज था, परन्तु अलग रेखा से। 2 शमूएल 8:17 के बारे में उलझन है कि इसे ''एज़्यातार का पुत्र अहीमेलेक'' पढ़ा जाए या ''अहीमेलेक का पुत्र एज़्यातार।'' अहीमेलेक का पुत्र एज़्यातार जंगल में शाऊल द्वारा याजकों के हत्याकांड के बाद दाऊद के साथ मिल गया था (1 शमूएल 22:20)। इसके बाद से सादोक और *एज़्यातार* को याजकों के रूप में लिखा गया है (2 शमूएल 17:15; 20:25)। सज़्भव है कि एज़्यातार जो दाऊद के पास भाग गया था, का अहीमेलेक नामक कोई पुत्र हो, जिसका आगे एज़्यातार नामक पुत्र हो और वे सब महायाजक हों। यह भी सज़्भव है कि अहीमेलेक का ही नाम एज़्यातार हो। इस मामले को सुलझाने के लिए हमारे पास पर्याप्त जानकारी नहीं है। [25]करेते से आए भाड़े के सैनिक Cherethites थे। [26]भाड़े के पलिश्ती सैनिक Pelethites थे। [27]दाऊद ने गोत्रों के बीच होने वाले टकराव से बचने के लिए विदेशी सैनिकों को भाड़े पर लिया होगा। [28]2 शमूएल 8:18 में मूल इब्रानी शास्त्र में कहा गया है कि दाऊद के पुत्र ''याजक'' थे। ज़्योंकि वे लेवीय घराने से नहीं थे और ज़्योंकि इतिहास का लेखक एक अलग शज़्द का इस्तेमाल करता है, वे सामान्य अर्थ में याजक नहीं थे। 2 शमूएल 8 में KJV में उन्हें ''प्रधान हाकिम'' तथा NIV में ''शाही सलाहकार'' कहा गया है। [29]बर्टन कॉफ़मैन, *कमैन्ट्री ऑन सैकंड सैमुअल* (अबिलेन, टैज़्सस: ACU प्रैस, 1992), 114. [30]यदि 2 शमूएल 21 की घटनाएं 2 शमूएल 9 के बाद घटीं, तो शाऊल के परिवार के और लोग अभी जीवित थे (नोट 2 शमूएल 21:8)। सीबा शायद दाऊद के मूल कथन को जानता था, ''जिसको मैं *योनातन के* कारण प्रीति दिखाऊं,'' और केवल योनातन के घराने में से किसी के बारे में पूछा था।

[31]देखें 1 इतिहास 8:34. ''मरीज़्-बाल'' (या मरी-बाल) का अर्थ है अनिश्चित; निर्भर करता है कि ''बाल'' का अर्थ ''यहोवा'' भी हो सकता है और मूर्ति वाला देवता भी। इसका अर्थ ''बाल का विरोधी'' या ''परमेश्वर का प्रिय'' हो सकता है। ''बाल'' शज़्द लिखने से बचने के लिए, 1 और 2 शमूएल के लेखक न ''लज्जा'' के लिए इब्रानी शज़्द का इस्तेमाल किया (''ईशबोशेत'' नाम पर पहले नोट्स देखें)। ''मपीबोशेत'' का अर्थ है ''लज्जा खिंडाने वाला'' या ''लज्जा का विरोधी।'' [32]माकीर सपष्टतया शाऊल और उसके घराने का

वफ़ादार था। मपीबोशेत पर दाऊद की कृपादृष्टि माकीर दाऊद का अनुयायी तथा समर्थक बन गया (2 शमूएल 17:27-29)। [33]लोदबार वास्तव में कहां था कुछ पता नहीं। कुछ लोगों का मत है कि यह ईशबोशेत की राजधनी रहे, महनैम के उज़र-उज़रपश्चिम की ओर लगभग बीस मील दूर था। [34]मपीबोशेत के पुत्र का नाम मीका था (2 शमूएल 9:12)। मीका की संतान इस्राएल में प्रसिद्ध हुई (देखें 1 इतिहास 8:34-40; 9:40-44)। [35]ज़्योंकि 1 इतिहास 3:5 में बतशेबा के पिता का नाम अज़्मीएल बताया बया है, इसलिए इस पर अलग अलग विचार है कि यह वही अज़्मीएल था या कोई और, तथा माकीर और अज़्मीएल कहीं भाई बहन तो नहीं थे-इस प्रकर तो माकीर बाद में दाऊद का साला बन गया। [36]शायद मपीबोशेत को उठा कर लाया गया था। [37]दाऊद ने उसका नाम लिया (2 शमूएल 9:6)। कयोंकि उसका नाम पुकारा गया इसलिए मैं इसका यह अर्थ निकालता हूं कि दाऊद को पज़्का नहीं था कि वह सचमुच उसके मित्र का पुत्र है। [38]नीचे मुंह करके झुकना राजा की उपस्थिति में आने का सामान्य ढंग था। [39]अपने आप को कुज़ा कहना स्वयं को नीचा दिखाना था। दाऊद ने शाऊल के सामने अपने आप को यही कहा था (1 शमूएल 24:14)। [40]2 शमूएल 9:9-11. बाद की घटनाओं की रोशनी में (2 शमूएल 16:1-4), सीबा अनिच्छा से सहमत हुआ।

[41]मपीबोशेत की कहानी अभी खत्म नहीं हुई थी। किसी समय दाऊद ने उसकी जान बज़्शी थी (2 शमूएल 21:7, 8)। पुनः, मपीबोशेत कहानी में उस समय आया था जब दाऊद अबशालोम के सामने से भागा था (2 शमूएल 16:1-4; 19:24-30)। [42]यह फिर कालक्रम का वाज़्य नहीं बल्कि एक पुल की तरह का वाज़्यांश लगता है। [43]ज़्योंकि नाहाश शाऊल का शत्रु था (1 शमूएल 11:1-11), इसलिए शायद उसने शाऊल का विरोध करने के लिए दाऊद के प्रति दया दिखाई। [44]रज़्ज़ा को 2 शमूएल 10:3 में ''इस नगर'' कहा गया था। रज़्बा यरदन नदी के पूर्व में, यरीहो से लगभग तेइस मील दक्षिण की ओर था। आज यह जॉरडन की राजधानी अज़्मान है। [45]इतिहास की पुस्तकका लेखक कहता है कि इनको भाड़े पर लेने का खर्च ''एक हजार किज़्कार चांदी'' था (1 इतिहास 19:6), जो एक करोड़ के लगभग था! [46]अन्य देश जिनके नाम मिलते हैं,अज़्मोन के पड़ोसी माका और तोब थे। [47]सोबा का राजा, हददेजेर प्रमुचा उकसाने वालों में से था (2 शमूएल 10:16, 19)। हम पहले ही अध्याय 8 में हददेजेर के साथ दाऊद की लड़ाई को देख चुके हैं (आयतें 3, 5, 7-10)। अध्याय 8 तथा अध्याय 10 के युद्धें में ज़्या सज़्बन्ध था, जानने के लिए हमारे पास पज़्की जानकारी नहीं है। कुछ लोगों का मानना है कि अध्याय 10 वाली लड़ाई पहले हुई थी; कुछ का मानना है कि वे एक ही युद्ध के भाग थे। [48]यह सज़्भवतया 2 शमूएल 8:6 से मेल खाता है, जो कहता है कि ''अरामी दाऊद के अधीन होकर भेंट ले आने लगे।'' [49]2 शमूएल 12:27. NASB, KJV, और RSV में ''जल नगरी'' है। NIV में ''इसकी जल आपूर्ति'' है। [50]सामान्यतया किसी नगर की लूट उसी की होती है जो उस पर कज़्ज़ा करता है। इस घटना में हम दाऊद द्वारा उसे अपमानित करने के बाद भी योआब की उसके प्रति जबर्दस्त वफादारी को देखते हैं।

[51]अनुदित शज़्द ''राजा'' अज़्मोनी देवता के लिए भी इस्तेमाल किया हो सकता है। ज़्योंकि एक किज़्कार सोना 100 से 125 पौंड होता था, इसलिए बहुतों का मानना है कि मुकुट मूर्ति के सिर पर रखा गया था। शायद, परन्तु याद रखें कि ऐसे मुकुट पहनने के लिए कम, प्रदर्शन के लिए अधिक होते थे। (नोट: इस मुकुट की कीमत कम से कम अढ़ाई लाज़ डॉलर होगी!) [52]NASB का अनुवाद मूल भाष के अधिक निकट है, परन्तु यह एक प्रश्न छोड़ देता है कि लेखक अज़्मोनी गुलामों की बात कर रहा था या प्रताड़ित लोगों की। ज़्योंकि अज़्मोन के शाही परिवार में से बाद में किसी ने दाऊद की सहायता की (2 शमूएल 17:27), मैं नहीं मानता कि दाऊद ने उन्हें प्रताड़ित किया हो, इसलिए मैंने NIV का अनुवाद इस्तेमाल किया है। परन्तु यह विचार करने पर कि दाऊद ने मोआबियों (अज़्मोनियों के भाइयों) के साथ कैसा व्यवहार किया था और उसके जनों ने अज़्मोन के राजा का अपमान किया था, यह सज़्भावना है कि दाऊद ने अज़्मोनियों को प्रताड़ित किया होगा। [53]मिस्र की यह नदी नील नदी नहीं है। पृष्ठ 84. [54]दाऊद की शपथ परमेश्वर की उपस्थिति में थी (1 शमूएल 20:16, 17)। [55]चार्ल्स आर. स्विंडॉल'स स्टडी गाइड, *डेविड:ए मैन आफ़्टर गॉड 'स ओन हार्ट* (फुलर्टन, कैलिफोर्निया: इनसाइट फ़ॉर लिविंग, 1988), 80 में इस प्रवज़्ता का उल्लेख है, पर नाम नहीं।